

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर
द्वारा आयोजित

REET/RTET

Level-Ist

कक्षा 1 से 5

पर्यावरण अध्ययन

विगत वर्षों के REET/RTET व अन्य परीक्षाओं में पूछे गये
अति महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का संकलन

: लेखक :

डॉ. मुकेश पंचौली

(CA, CS, LL.B., M.Com., B.Ed.)

•

: विशेष सहयोगी :

पुष्पेन्द्र कसाना

RES

एस.एल. स्वामी

वरिष्ठ अध्यापक

लोकेश कुमार शर्मा

प्राचार्य

च्यवन प्रकाशन, जयपुर

The Leading Publication of Rajasthan

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय/इकाई	पृष्ठ क्रमांक
	इकाई-1	5-26
1.1	परिवार-अर्थ एवं परिभाषा, सिद्धान्त, प्रकार, एकल परिवार, संयुक्त परिवार, कारक	
1.2	सामाजिक बुराईयाँ-बाल विवाह, बहु विवाह, दहेज प्रथा, बाल श्रम, बाल अपराध, दुर्व्यसन, इनके व्यक्तिगत, सामाजिक एवं आर्थिक दुष्परिणाम	
1.3	वस्त्र एवं आवास-विभिन्न ऋतुओं में पहने जाने वाले वस्त्र, भारत के विभिन्न राज्यों में पहने जाने वाले वस्त्र, वस्त्रों का रखरखाव, आवास, जीव-जन्तुओं के आवास, भवन निर्माण सामग्री, ग्रामीण बस्तियों के प्रकार एवं वर्गीकरण	
	इकाई-2	27-87
2.1	अपने परिवेश के व्यवसाय, कपड़े सिलना, बागवानी, कृषि कार्य, पशुपालन, सब्जी, राजस्थान के उद्योग, उपभोक्ता संरक्षण की आवश्यकता, सहकारी समितियाँ	
2.2	सार्वजनिक स्थल एवं संस्थाएँ-विद्यालय, चिकित्सालय, डाकघर, बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, सार्वजनिक सम्पत्ति, विद्युत और जल का अपव्यय, रोजगार नीतियाँ, पंचायत, विधानसभा और संसद की सामान्य जानकारी	
2.3	हमारी सभ्यता और संस्कृति-मेले, त्यौहार, वेशभूषा एवं खान-पान, कला व क्राफ्ट, पर्यटन स्थल, राजस्थान की प्रमुख विभूतियाँ	
	इकाई-3	88-107
3.1	परिवहन एवं संचार-यातायात एवं संचार के साधनों का जीवनशैली पर प्रभाव	
3.2	अपने शरीर की देखभाल-शरीर के बाह्य अंग और उनकी साफ-सफाई, संतुलित भोजन, रोग	
3.3	सजीव जगत-पादप, पादप जगत का वर्गीकरण, जन्तु, जन्तुओं के संगठन स्तर एवं वर्गीकरण, संरक्षित वन क्षेत्र (राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य, बाह्य संरक्षित क्षेत्र, विश्व धरोहर की दृष्टि से), राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक प्रतीक चिह्न (राज्य पुष्प, राज्य वृक्ष, राज्य पक्षी, राज्य पशु), वन्य पशु, संरक्षण, फसलों की जानकारी	
	इकाई-4	108-127
4.1	पदार्थ एवं ऊर्जा-पदार्थ की प्रकृति, पदार्थ के सामान्य गुण (रंग, अवस्था, तन्यता, घुलनशीलता), ऊर्जा एवं ऊर्जा के विभिन्न रूप, ऊर्जा संरक्षण एवं ऊर्जा रूपान्तर, प्रकाश, प्रकाश प्रकृति, प्रकाश के गुण, वायु तथा जल, वन, वनभूमि और मरुस्थल की मूलभूत जानकारी, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, राजस्थान के नवीकरणीय तथा अनवीकरणीय संसाधन और इनके संरक्षण की अवधारणा, मौसम और जलवायु, जल चक्र	
	इकाई-5	128-141
5.1	पर्यावरण अध्ययन के क्षेत्र एवं संकल्पना, पर्यावरण अध्ययन, पर्यावरण शिक्षा के अधिगम सिद्धान्त, पर्यावरण विषय का महत्त्व, समाकलित पर्यावरण अध्ययन, पर्यावरण अध्ययन एवं सामाजिक विज्ञान विषयों में अन्तर, विज्ञान के सामान्य अन्तर्सम्बन्ध, क्रिया-कलाप (संकल्पना प्रस्तुतीकरण के उपागम)	
	इकाई-6	142-160
6.1	प्रयोगात्मक/प्रायोगिक कार्य, समग्र एवं सतत् मूल्यांकन, पर्यावरण शिक्षण की समस्याएँ, चर्चा, शिक्षण सहायक सामग्री	

1.1 परिवार (Family)

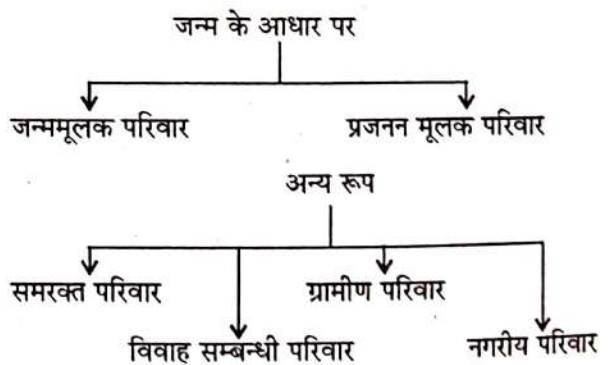
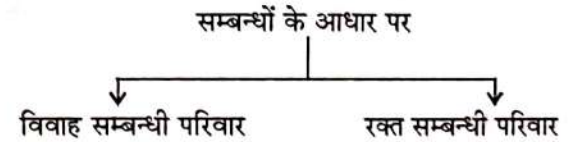
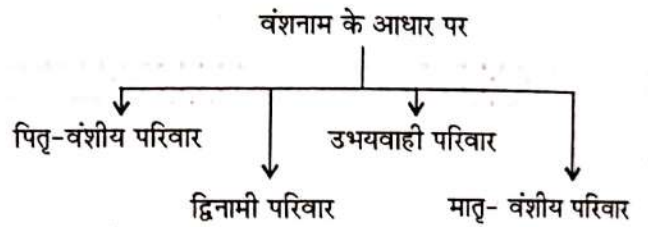
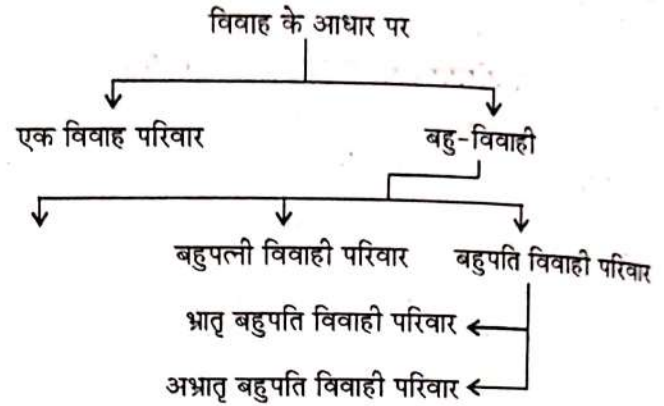
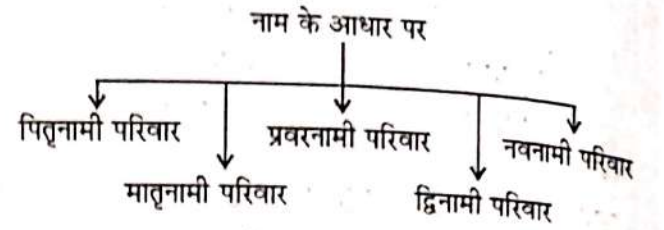
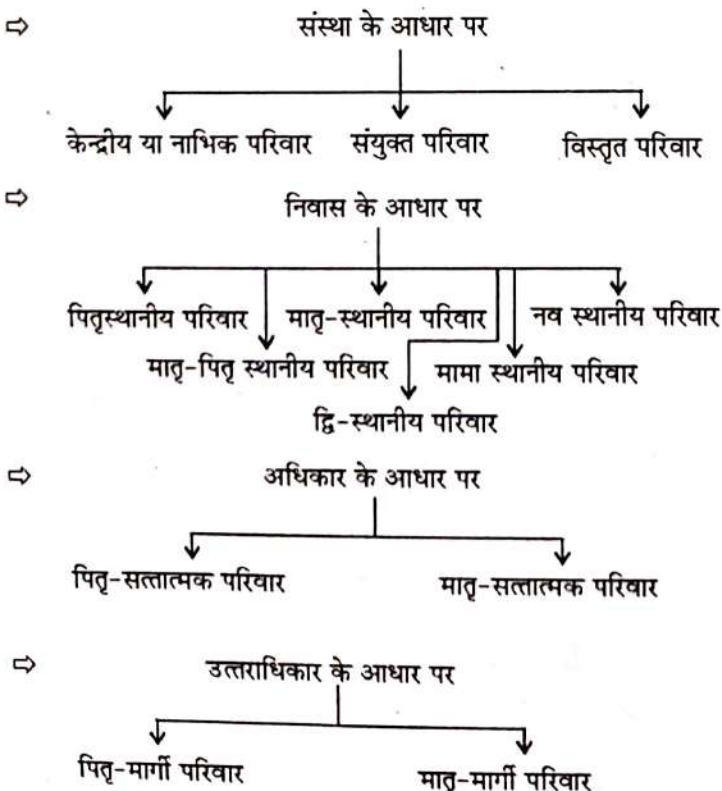
- अंग्रेजी शब्द 'फेमिली' (Family) रोमन शब्द 'फेमलस' (Famulus) से बना है, जिसका अर्थ नौकर से है।
- परिवार शब्द को अनेक लोगों ने परिभाषित किया है, जैसे—
- 'परिवार, पति, पत्नी एवं बच्चों से मिलकर बना एक जैविक सामाजिक इकाई है।' —इलियट तथा मैरिल
- 'परिवार ही एक एक ऐसा समूह है जिसे मनुष्य पशु अवस्था से अपने साथ लाया है।' —मैलिनोवस्की
- 'परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो रक्त के आधार पर एक दूसरे से संबंधित है तथा जो एक-दूसरे के सम्बन्धी है।' —डेविस
- 'परिवार संस्थागत सामाजिक समूह है, जिस पर जनसंख्या प्रस्थापन का भार है।' —आरनाल्ड ग्रीन
- 'परिवार पर्याप्त निश्चित यौन सम्बन्ध द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों के जनन एवं लालन-पालन की व्यवस्था करता है।' —मैकाइवर एवं पेज
- 'परिवार से हम संबंधों की वह व्यवस्था-समझते हैं जो माता-पिता और उनके बच्चों के बीच पाया जाता है।' —क्लेमर
- 'परिवार कमोवेश पति तथा पत्नी के मध्य एक ऐसा स्थायी सम्बन्ध है जो संतान सहित भी हो सकता है और सन्तान रहित भी।' —ऑगबर्न
- 'एक दृष्टिकोण से परिवार की परिभाषा यह है कि एक स्त्री, अपने बच्चे सहित तथा पुरुष उनकी देख-भाल के लिए हो।' —बीजन्स
- 'परिवार पति, पत्नी, बच्चों सहित अथवा उसके बिना कम या अधिक स्थायी समिति है।' —निम्काफ
- 'आधुनिकीकृत युग में सम्बन्धों की वह शृंखला जिसमें पति-पत्नी तथा सन्तानों के स्थायी सम्बन्ध, सन्तान रहित पति-पत्नी के स्थायी सम्बन्ध अथवा एकल जनक सन्तानों के सम्बन्ध को परिवार शब्द से इंगित किया जा सकता है।' —गुडे
- के अनुसार, 'परिवार एक गृहस्थ समूह है जिसमें माता-पिता और सन्तान साथ-साथ रहते हैं। इसको मूल रूप से दम्पति और उसकी सन्तान रहती है।' —लूसी मेयर
- मरडॉक ने 250 आदिम परिवारों का अध्ययन करने पर पाया कि कोई भी समाज ऐसा नहीं था जिसमें परिवार रूपी संस्था अनुपस्थित हो।
- परिवार के वर्गीकरण के आधार पर परिवार व विवाह की उत्पत्ति के अनेक सिद्धान्त हैं जो इस प्रकार से हैं—
- शास्त्रीय सिद्धान्त—
- इस सिद्धान्त के प्रतिपादकों में अरस्तु, प्लेटो आदि प्रमुख हैं।

- 1861 में सन हेनरी मेन ने विश्व के विभिन्न समाजों का अध्ययन कर इस सिद्धान्त को आगे बढ़ाया।
- इस सिद्धान्त के अनुसार परिवार का आरम्भिक स्वरूप पितृसत्तात्मक था।
- हेनरी मेन ने भारत का उदाहरण देते हुए कहा की परिवार, पितृ-स्थानीय और पितृवंशीय भी था।
- यौन साम्यवाद सिद्धान्त—
- इस सिद्धान्त के प्रतिपादकों में मार्गन, फ्रेजर, ब्रिफाल्ट आदि हैं।
- मार्गन का मानना है कि आदिम समाजों में 'सिब' ही एक मात्र समूह होता था, जिसमें यौन साम्यवाद प्रचलन में था।
- इस सिद्धान्त के अनुसार कोई भी पुरुष किसी भी स्त्री से यौन सम्बन्ध स्थापित कर सकता था। इसी अवस्था को उन्होंने यौन साम्यवाद कहा है।
- इस युग में विवाह और परिवार जैसी मान्यता नहीं थी।
- Note—यौन साम्यवाद में यौन स्वच्छन्दता के कारण पितृत्व का निर्धारण करना कठिन था। जिससे पिता महत्वहीन था एवं माता महत्त्वशील थी। माता की प्रमुखता के कारण मातृसत्तात्मक परिवार ही प्रारम्भिक समूह था।
- एक विवाह सिद्धान्त—
- 'हिस्ट्री ऑफ़ ह्यूमन मैरेज' नामक पुस्तक में वेस्टरमार्क ने अपना एक-विवाह का सिद्धान्त प्रस्तुत किया है।
- डार्विन का विचार है कि परिवार की उत्पत्ति पुरुष के एकाधिकार की भावना के कारण हुई है।
- वेस्टरमार्क के एक विवाह सिद्धान्त की पुष्टि जुकरमेन तथा मैलिनोवस्की ने भी की है।
- वेस्टरमार्क के अनुसार जब पुरुष सम्पत्ति की भांति स्त्री पर भी अपने एकाधिकार को बनाये रखने में सफल हुआ तो वह एक विवाह की प्रथा बन गयी।
- मैलिनोवस्की ने अपनी पुस्तक 'सेक्स एण्ड रिप्रेशन इनसेवेज' में बताया है कि मनुष्य पशु अवस्था से ही परिवार को अपने साथ लाया है और वह परिवार एक विवाही परिवार है।
- मातृसत्तात्मक सिद्धान्त—
- इस सिद्धान्त का प्रतिपादन ब्रिफाल्ट ने 'दी मदर्स' नामक पुस्तक में किया।
- ब्रिफाल्ट ने बताया की आरम्भ में यौन सम्बन्ध बहुत ढीले थे।
- स्त्री व पुरुष की तुलना में माता व पुत्र के सम्बन्ध ही घनिष्ठ थे।
- सन्तान के लालन-पालन का भार माता पर था।
- ब्रिफाल्ट का मानना है मानव परिवार तो क्या पशु परिवार का भी आदि रूप मातृसत्तात्मक ही था।
- बैकोफान तथा टायलर भी इस सिद्धान्त का समर्थक किया है।

- टायलर का मत है कि सर्वप्रथम परिवार का स्वरूप मातृ सत्तात्मक था जो बाद में मातृ सत्तात्मक और पितृसत्तात्मक आपस में मिश्रित हो गया एवं अनन्तः पितृसत्तात्मक परिवार का उद्भव हुआ।
- उद्विकासीय सिद्धान्त- इस सिद्धान्त के प्रतिपादकों में बैकोफन हैबिलेण्ड, क्रचफिल्ड आदि प्रमुख हैं।
- मार्गन ने इस सिद्धान्त की विस्तृत व्याख्या की है।
- जीवनशास्त्रीय उद्विकास का सिद्धान्त मानव समाज के उद्विकास पर लागू करने का श्रेय स्पेन्सर को भी है।
- मैकलेनन, लुबोक तथा टायलर इस सिद्धान्त के प्रमुख समर्थक रहे हैं।
- बैकोफन ने परिवार के उद्विकासीय क्रम को इस प्रकार से प्रस्तुत किया है- 1. परिवार का आदिकालीन स्वरूप 2. बहुपति-विवाही परिवार 3. बहुपत्नी विवाही परिवार 4. एक विवाही परिवार।
- मार्गन ने भी परिवार के उद्विकास को योजनाबद्ध रूप में प्रस्तुत किया- 1. समरक्त परिवार 2. समूह परिवार 3. सिण्डेस्मियन परिवार 4. पितृसत्तात्मक परिवार 5. एक विवाही परिवार।
- 'पुनालुअन परिवार' से मार्गन का मतलब उस परिवार से है जिसमें सामूहिक विवाह का प्रचलन था। जिसके अंतर्गत एक परिवार की सभी बहिनों से होता है।
- सिण्डेस्मियन व्यवस्था में एक व्यक्ति का विवाह एक स्त्री से होता था, किन्तु वह परिवार में विवाहित सभी स्त्रियों के साथ लैंगिक सम्बन्ध बना सकता था।
- परिवार का वह सबसे छोटा स्वरूप जो एक पुरुष, स्त्री तथा उन पर निर्भर बच्चों से मिलकर बना है, केन्द्रीय परिवार कहलाता है।

विभिन्न आधारों पर परिवार के प्रकार

- परिवार के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं-



परिवार के प्रकार

एकल परिवार

- वह परिवार जिसमें पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चें रहते हैं उसे एकल परिवार की श्रेणी में रखा जाता है।
- एकल परिवार, परिवार का सबसे छोटा (आकार की दृष्टि से) रूप होता है।
- इस परिवार में अभिभावक अपने बच्चों को सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराने में सक्षम होते हैं।
- अभिभावक अपना समस्त ध्यान बच्चों पर केन्द्रित करते हैं।
- इस परिवार के बच्चों में आत्मनिर्भरता एवं निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है।

ऐसे इस परिवार के बच्चों में अपने बुजुर्गों के प्रति लगाव कम होता है।

यदि एकल परिवार में माता-पिता दोनों काम-काजी हैं तो वे अपने बच्चों पर समुचित ध्यान नहीं दे पाते जिससे बच्चों में 'एकाकीपन' की भावना का विकास हो जाता है।

एकाकीपन की भावना से बच्चों का सर्वाङ्गीण विकास नहीं हो पाता।

Note-सदस्यों की स्थिति/संख्या के आधार पर एकल परिवार के निम्नलिखित रूप हो सकते हैं। जैसे-

1. **मूल एकल परिवार**-इस परिवार में पति-पत्नी बच्चों के साथ या बच्चों के बिना रहते हैं।
2. **अनुपूरित एकल परिवार**-इस परिवार में पति-पत्नी अपने अविवाहित बच्चों के अलावा अन्य सदस्य (जैसे कोई अविवाहित, तलाकशुदा, विधुर या विधवा) रहते हैं।
3. **उपमूल परिवार**-इस परिवार में कोई विधवा/विधुर अपने अविवाहित बच्चों/सगे भाई-बहनों जो अविवाहित/विधवा/विधुर/तलाकशुदा हों के साथ रहते हैं।
4. **अनुपूरित मूल परिवार**-इस परिवार जिसमें कोई विधवा अपने अविवाहित बच्चों के साथ अपनी विधवा सास के पास रहे।

संयुक्त परिवार (Joint Family)

इरावती कर्वे का मानना है कि, यहां (भारत) परिवार का अर्थ संयुक्त परिवार से ही है।

डॉ. दुबे का कथन है कि 'यदि कई केन्द्रीय परिवार एक साथ रहते हों और उनमें निकट का सम्बन्ध हो, एक स्थान पर खाना, खाते हों और एक आर्थिक इकाई के रूप में रहते हो तो उसे संयुक्त परिवार कहते हैं।'

मैक्समूलर के अनुसार, 'संयुक्त परिवार भारत की आदिम परम्परा है।'

के. एम. पणिक्कर के अनुसार, 'हिन्दू समाज की इकाई व्यक्ति नहीं परिवार है।'

हेनरी मेन के अनुसार, 'हिन्दू संयुक्त परिवार एक समूह है, जिसमें जीवित पूर्वज एवं पुत्र तथा विवाह द्वारा इन पुत्रों से संबंधित संबंधी शामिल होते हैं।'

पी. एन. प्रभु के अनुसार, 'संयुक्त परिवार में न केवल माता-पिता एवं बच्चे भाई, तथा सौतेले भाई संयुक्त सम्पत्ति पर जीवन-यापन करते हैं, बल्कि इसमें यदा-कदा विभिन्न पीढ़ीया के सगोत्र सम्बन्धी एवं पूर्वज भी सम्मिलित होते हैं।'

पी. एन. प्रभु ने लिखा है, 'सामान्यतः एक संयुक्त परिवार का अर्थ है.....तीन पीढ़ीयों के जीवन का सामान्य स्वरूप।'

बुलेटिक ऑफ दि क्रिश्चियन इन्स्टीट्यूट फॉर दि स्टडी आफ सोसायटी में लिखा है-'संयुक्त परिवार से मेरा मतलब उस परिवार से है, जिसमें विभिन्न पीढ़ीयों के सदस्य एक-दूसरे के प्रति, पारस्परिक कर्तव्य भावना से सम्बद्ध रहते हैं।'

इरावती कर्वे ने संयुक्त परिवार को परिभाषित करते हुए लिखा है, संयुक्त परिवार ऐसे व्यक्तियों का एक समूह है जो सामान्यतः एक ही घर में रहते हैं, जो एक ही रसोई में बना भोजन करते हैं, जो सम्पत्ति के सम्मिलित स्वामी होते हैं तथा जो सामान्य पूजा में भाग

लेते हैं और जो किसी न किसी प्रकार से एक दूसरे के रक्त सम्बन्धी हो।

⇒ **संयुक्त परिवार के लक्षण-**

तीन पीढ़ीयों का परिवार,

सामान्य आवास,

सामान्य सम्पत्ति,

सामान्य रसोई,

सामान्य पूजा पद्धति।

⇒ **संयुक्त परिवार के गुण या लाभ कार्य-**

शासन सम्बन्धी,

धार्मिक कार्य,

मार्ग दर्शक,

मनोरंजन,

बच्चों का पालन-पोषण,

धन का उचित उपयोग,

सम्पत्ति के विभाजन से बचाव,

श्रम विभाजन,

संकट का बीमा,

संस्कृति की रक्षा,

अनुशासन एवं नियंत्रण,

राष्ट्रीय एकता एवं सेवा,

सामाजिक सुरक्षा।

⇒ **संयुक्त परिवार के प्रमुख दोष या समस्याएं-**

अकर्मण्य व्यक्तियों की वृद्धि

व्यक्तित्व के विकास में बाधक

स्त्रियों की निम्न स्थिति,

कलह का केन्द्र

अधिक सन्तानोत्पत्ति

कुशलता में बाधक

गतिशीलता में बाधक

गोपनीय स्थान का अभाव

कर्ता की स्वेच्छाचारिता

सामाजिक समस्याओं का पोषण

शुल्क एवं नीरस वातावरण।

⇒ **संयुक्त परिवार में परिवर्तन के कारण**

विभिन्न समाजशास्त्रीयों ने संयुक्त परिवार के परिवर्तन कारणों का विभाजन किया जैसे-

डॉ. आर. एन. सक्सेना ने संयुक्त परिवार में परिवर्तन लाने वाली शक्तियों को तीन भागों में विभक्त किया है-

परिवर्तन लानेवाली शक्तियाँ

आर्थिक शक्तियाँ

भावात्मक शक्तियाँ

नूतन सामाजिक कानून

1. **आर्थिक शक्तियाँ**-औद्योगिकरण एवं पूंजीवादी।

2. **भावात्मक शक्तियाँ**-उदारवाद, व्यक्तिवाद एवं पश्चिमी विचाराधारा।

3. **नये सामाजिक कानून**-विवाह एवं सम्पत्ति से संबंधित कानून।